एक दिव्य घोड़ा
भारतीय लोककथा

एक दिव्य घोड़ा

भारतीय लोककथा

रूपांतरण व चित्रण : डेमी

हिंदी : दीपक थानवी
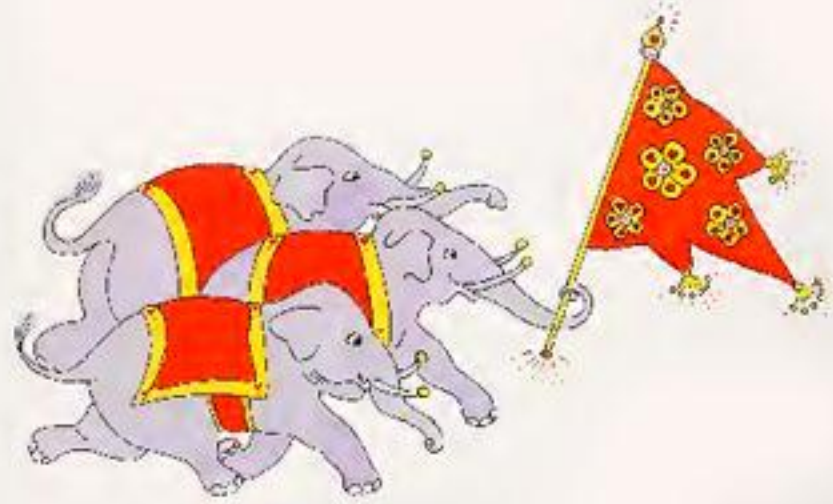
बहुत समय पहले भारत में, एक युवा राजा था जिसके पास हाथी और मोर थे, सफेद बाघ और काले शेर थे और माणिक और हीरे थे। लेकिन उसके पास वह दिव्य घोड़ा नहीं था।
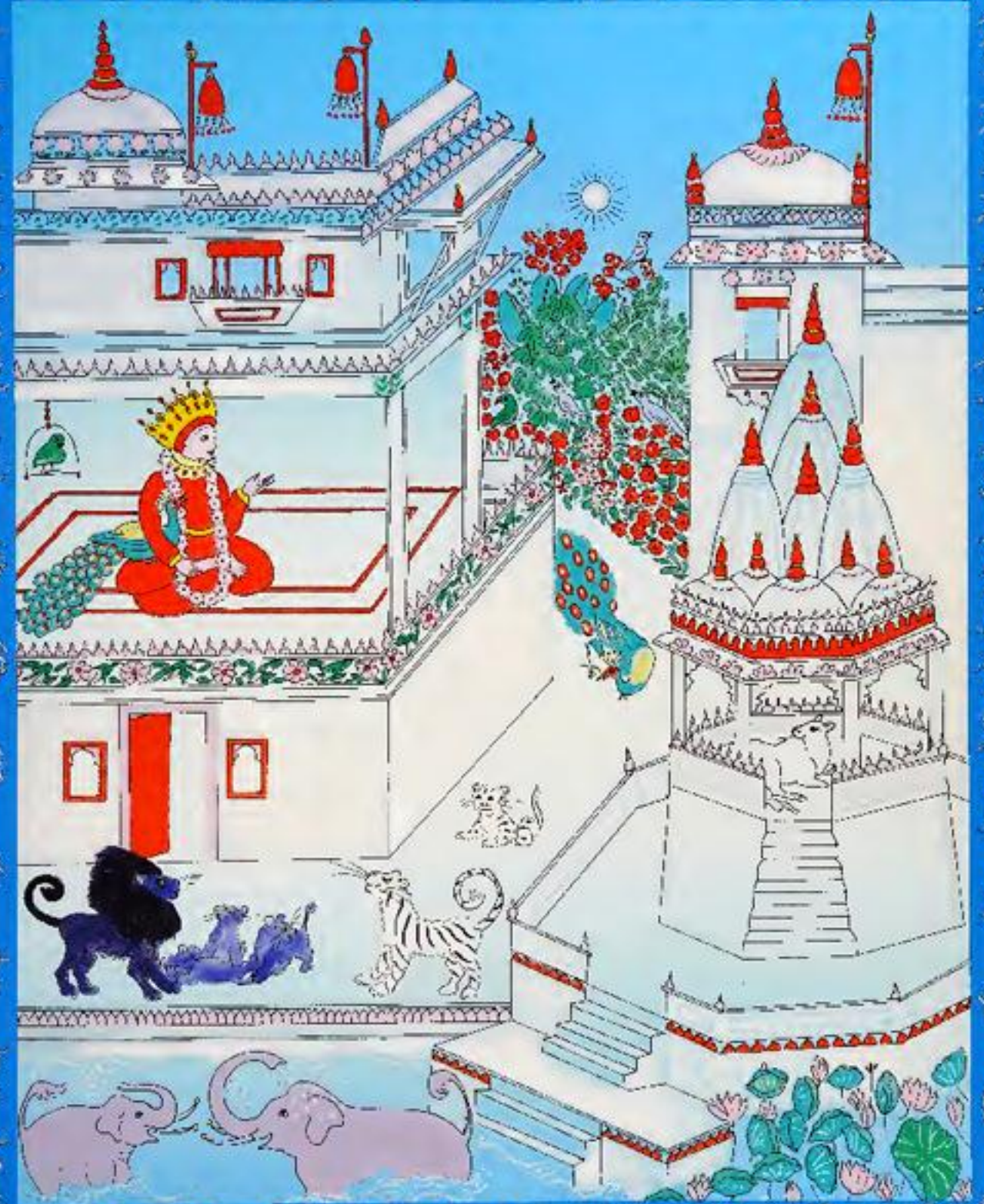
लेकिन भला यह दिव्य घोड़ा क्या है? वास्तव में एक दुर्लभ खजाना! वह फरिश्तों द्वारा ज्ञान और साहस, वैभव और विजय के साथ संपन्न किया गया ; और यह सारे गुण वह अपने संचालक (घुड़सवार) को देगा। उसकी सुंदर त्वचा चंद्रकांत के समान चिकनी है; उसके गर्दन के बालों की चमक समुद्र की टूटती लहरों की तरह है; उसके पैरों में आग की लपटें हैं और उसकी आवाज़ सोने की तुरही से निकली आवाज़ की तरह गूँजती है।

राजा ने यह घोषणा की थी कि जो भी ऐसे दुर्लभ दिव्य घोड़े की खोज करेगा उसे इनाम में माणिक्यों का पहाड़ मिलेगा। क्योंकि राजा जानता था कि केवल वह पवित्र घोड़ा ही सबसे खतरनाक बहुमुखी सिर वाले साँप 'कालिया' से राज्य की सुरक्षा कर सकता है।
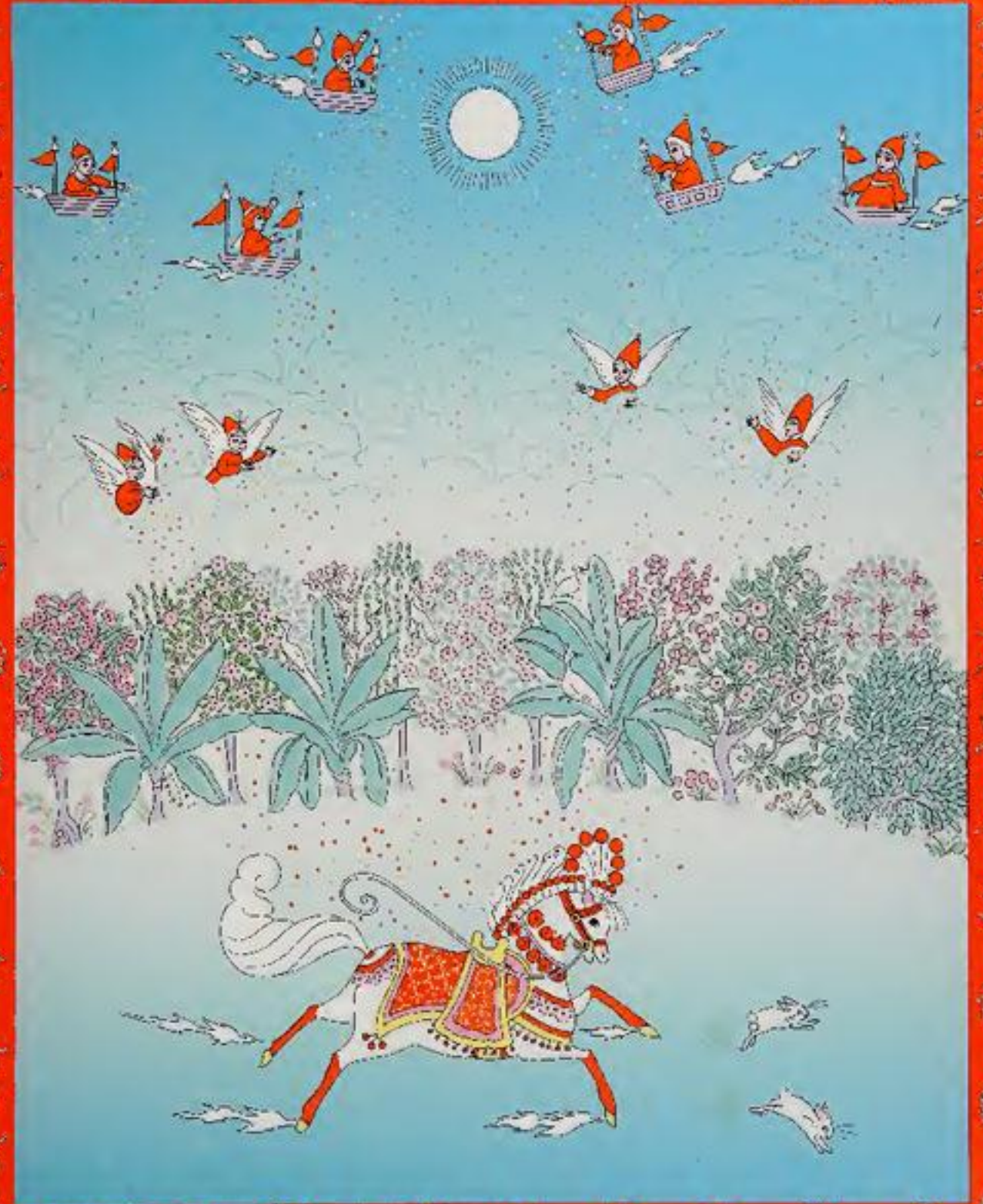
राजा के देश में एक आदमी था जो अपनी जीविका के लिए घोड़ों को पालता था, और वसंत-ऋतु के एक शुभ दिन पर उसने अपने घोड़ो को बाज़ार में बेचने का निर्णय लिया। लेकिन रास्ते में, एक घोड़ी ने एक बच्चे को जन्म दिया। बच्चा शुद्ध सफ़ेद रंग का था। तुरंत ही अन्य सारे घोड़ों ने अपनी गति धीरे की और फिर वे सब उस घोड़ी और उसके बच्चे के पास गये।
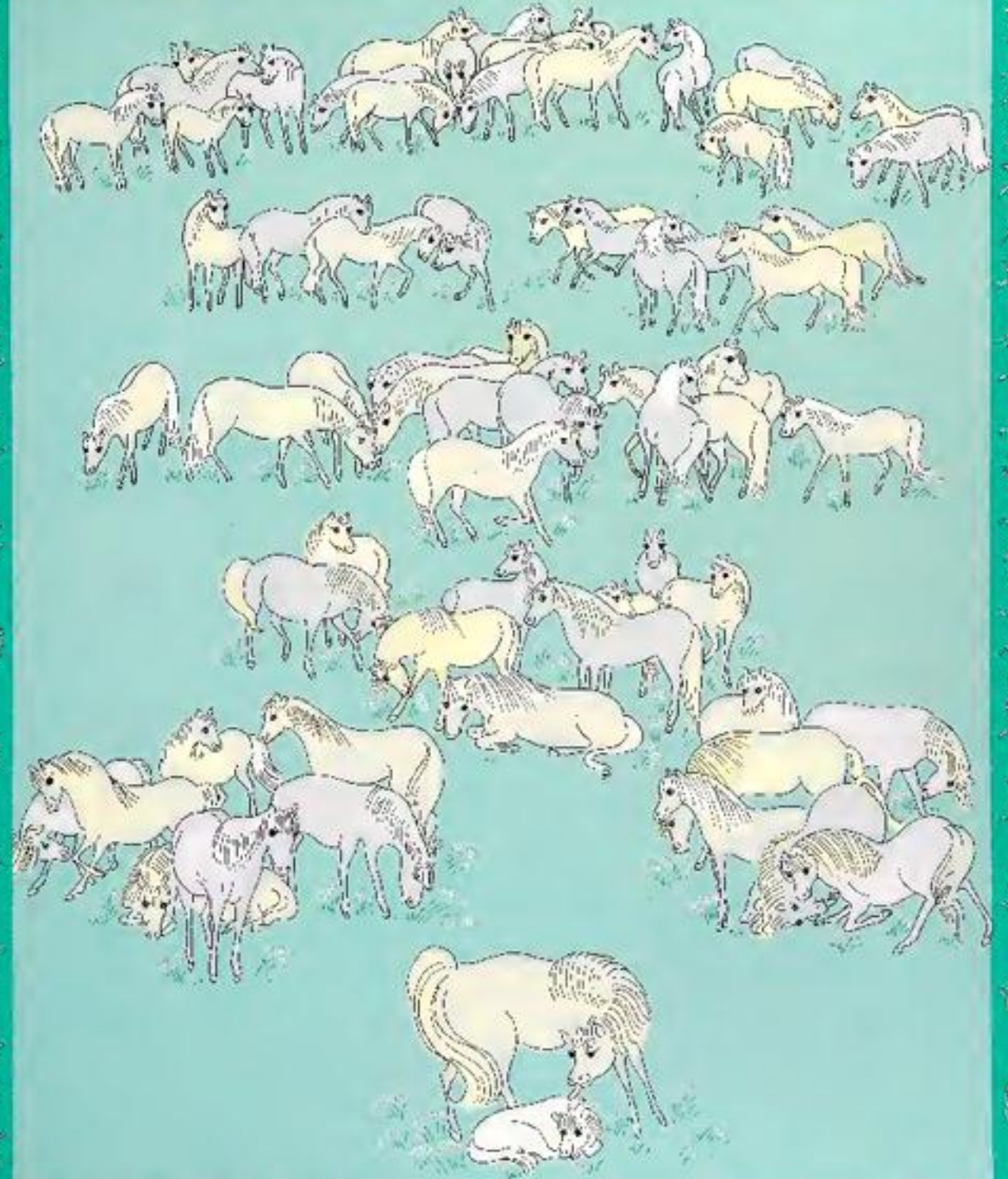
"यह तो मुसीबत बन गया!" घुड़सवार चिंतित होकर सोचने लगा। "पहले तो उस बच्चे के जन्म से हमारी यात्रा रुक गयी, और अब वो अपनी एड़ियों से सबको मार रहा है! वह बहुत ज्यादा चंचल है, इधर-उधर छलांगें लगाता है, और अब वह शायद सभी को अपने छोटे और तीखे दांतो से काटने लगेगा। मैं उस सफ़ेद रंग के बच्चे को रास्ते में मिलने वाले पहले व्यक्ति को बेच दूंगा।"

लेकिन कोई भी उसे लेना नहीं चाहेगा।

"नहीं , धन्यवाद!" सभी यही कहते हैं। "आपका यह छोटा घोड़ा सभी को अपनी एड़ियों से मारता है और अपने दांतों से काटता है। निश्चय ही यह हमें हानि पहुँचायेगा। यह तो डरावना प्राणी है!" शीघ्र ही राज्य में सभी को इस 'भयानक' छोटे घोड़े के बारे में पता लग गया।
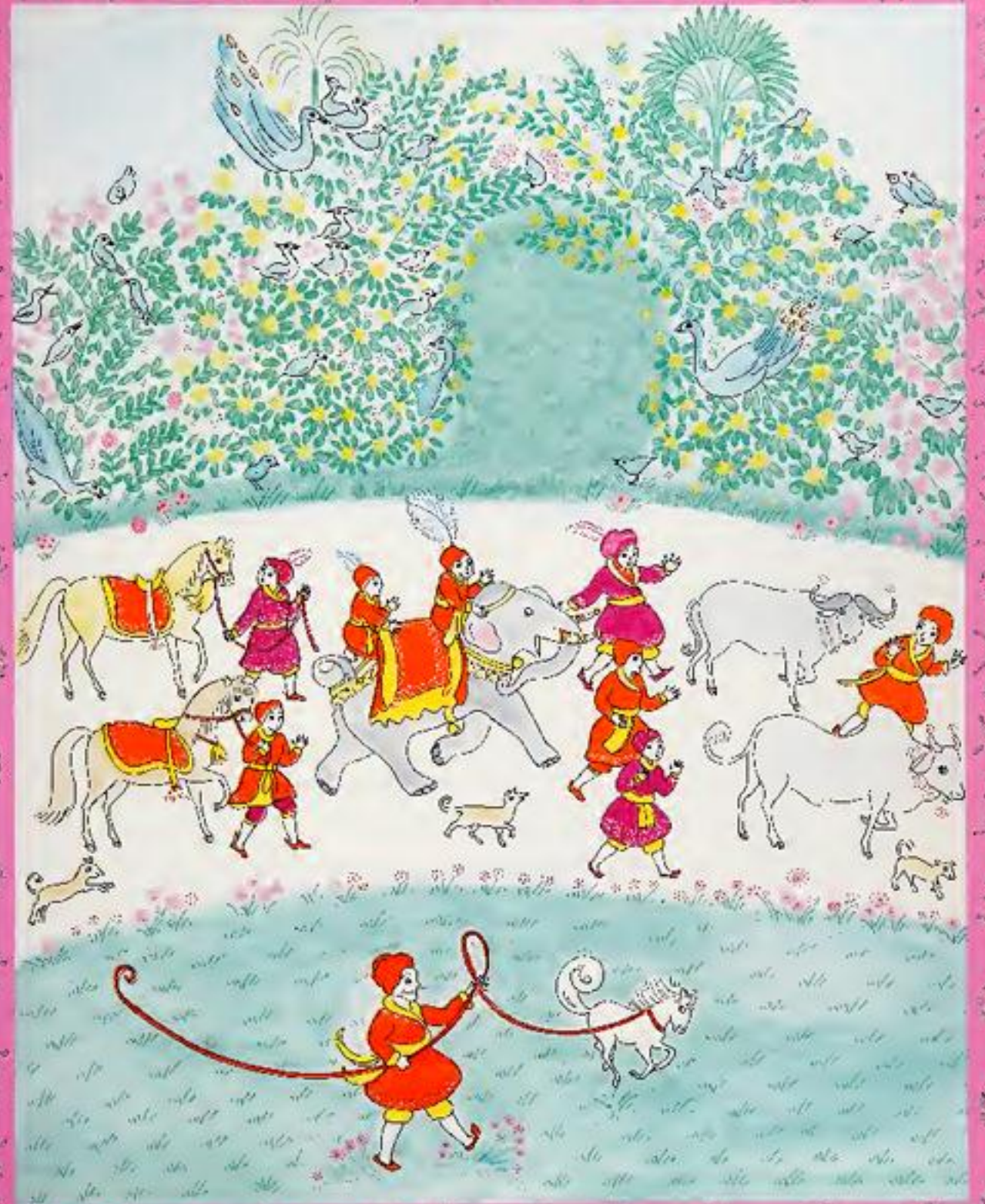
सिवाय एक आदमी के। वह कुम्हार जो हरदम अपनी धुन में ही रहता है उसने अभी तक उस 'भयानक' छोटे घोड़े के बारे में कुछ भी नहीं सुना था। लेकिन जब कुम्हार ने उस घोड़ी के बच्चे को देखा, तब एक अजीब घटना घटी। वह फुर्तीला छोटा बच्चा अपने समूह के घोड़ो के आगे नाचने लगा, उस कुम्हार के ठीक सामने उछल-कूद करने लगा और कुम्हार के गाल पर अपनी नाक सहलाने लगा!

घुड़सवार को डर था कि कहीं यह छोटा बच्चा बेचारे कुम्हार के कान न काट ले, या उसे लात मारकर ज़मीन पर न गिरा दे और इससे उसके मटके न फूट जायें। लेकिन वह घोड़ा तो कुम्हार के हाथ ऐसे चाट रहा था, जैसे वह उस कुम्हार का कोई पालतू जानवर है।
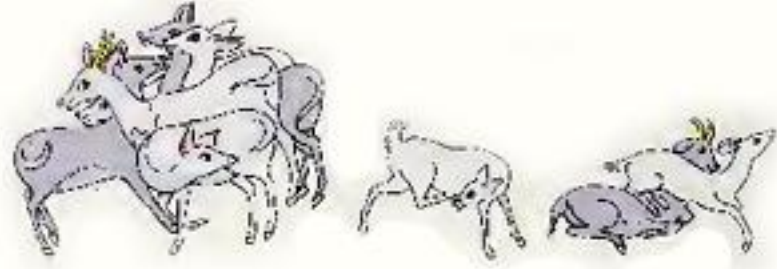
बच्चे का कुम्हार के प्रति लगाव देखकर घुड़सवार ने कुम्हार को कहा,"अच्छा महोदय, मेरे पास एक भी मटका नहीं है और मुझे आपके सारे मटकों की आवश्यकता है। इन मटकों के बदले मैं आपको मेरा प्रिय छोटा घोड़ा दूंगा, हालांकि उससे अलग होना मेरे लिए कठिन होगा।" कुम्हार को उस चंचल छोटे घोड़े के प्रति सहज लगाव महसूस हुआ, सो उसने यह सौदा मंजूर किया।
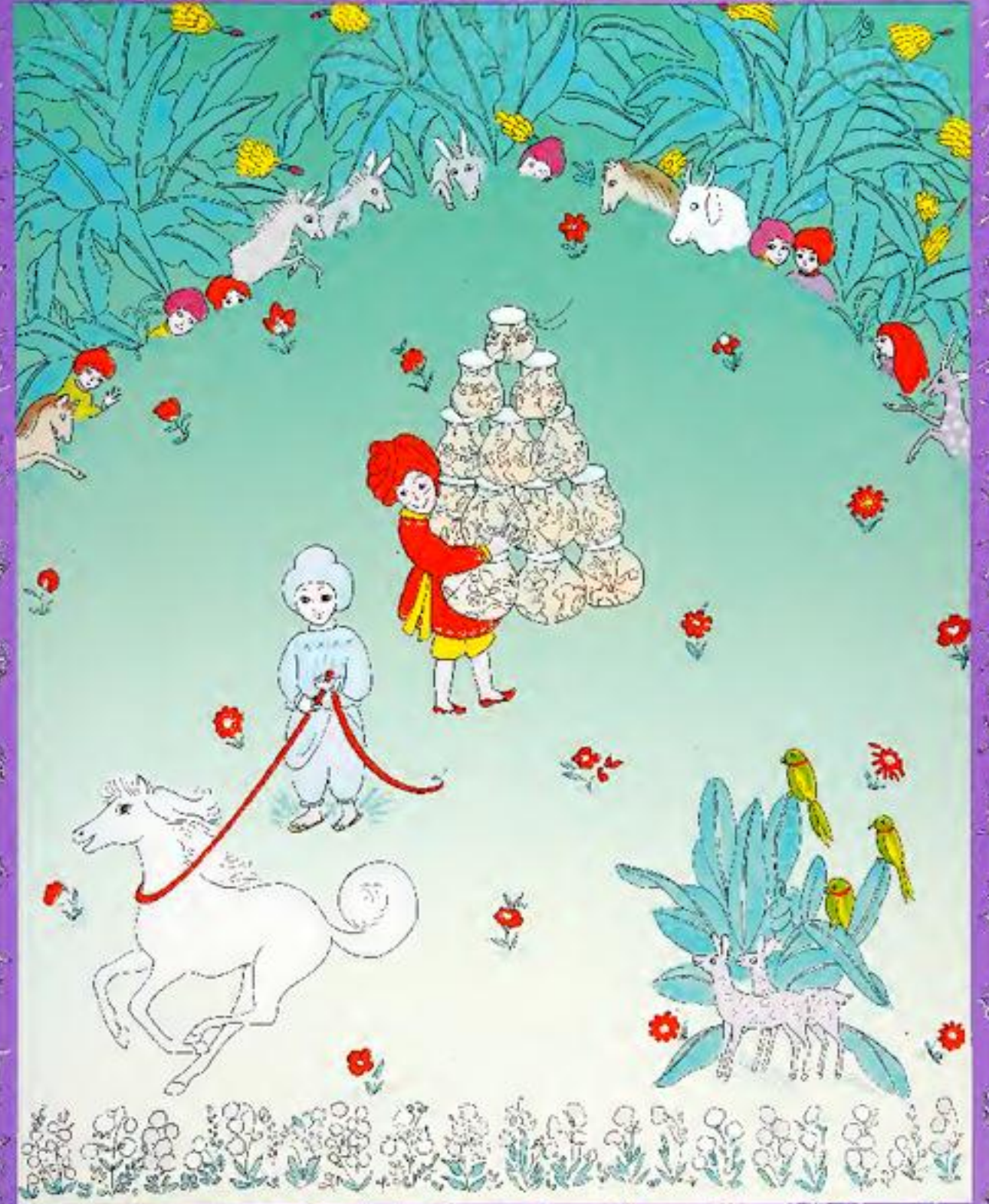
वह चंचल तो था ही, लेकिन कुम्हार की कुटिया के बाहर उस छोटे घोड़े ने विशेष ध्यान रखा। उसने मटकों के आसपास चलते समय सावधानी से अपने कदम बढ़ाए और उनमें से किसी एक भी मटके को नहीं तोड़ा। एक दिन जब कुम्हार कुछ मिट्टी लेने के लिए बाहर गया, तो घोड़ा उसके पीछे-पीछे दुलकी चाल (छोटे कदम लेते हुए तेज़ चलना) से चल पड़ा। जब उसने देखा कि उसके मालिक का बोरा भर गया है और उसका वज़न ज्यादा है, उसने भारी भरकम बोरे को कुटिया ले जाने के लिए अपनी पीठ आगे की।

कुम्हार ने सोचा, "क्या बुद्धिमान और विचारशील जानवर है! मुझे उसके लिए अस्तबल (घोड़े का घर) बनाना चाहिए।" यह उसने किया भी। उसका खूब पालन-पोषण किया। समय के साथ-साथ छोटा-सा बछेड़ा एक अद्भुत सुंदर घोड़े में बदल गया।
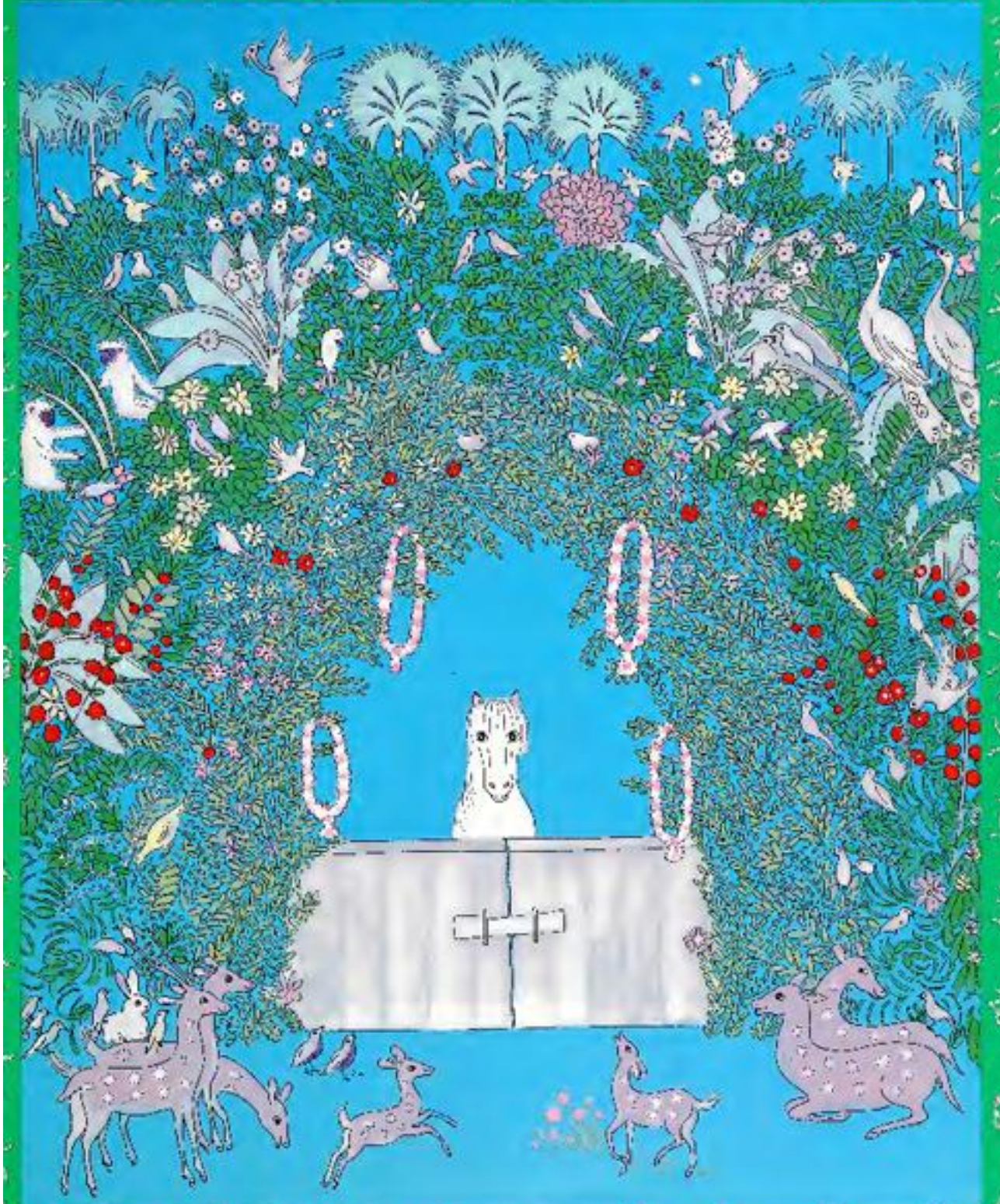
इस बीच, राजा के दरबार में, कोई भी अभी तक दिव्य घोड़े को खोज नहीं पाया था। एक दर्जन ज्योतिषियों को मदद करने के लिए बुलाया गया था, क्योंकि यह आशंका थी कि बहुमुखी सिर वाला साँप 'कालिया' राज्य की ओर बढ़ रहा है। ज्योतिषियों ने सितारों और चंद्रमा से प्रार्थना की, मंत्रों का जप किया, और हवन भी किया, लेकिन फिर भी उस दिव्य घोड़े का कोई पता नहीं लगा। अंतिम उपाय के रूप में, उन्होंने एक चमत्कारी क्रिस्टल की बनी गेंद में देखने का फैसला किया। गेंद के केंद्र में, चंद्रमा की तरह सफेद घोड़े की छवि दिखाई दी, जिसके पैरों से आग की लपटें निकल रही थी।
"वह वहाँ है!" ज्योतिष चिल्लाते हुए बोले। "उसके भाग्य में सैकड़ों का सरदार बनना लिखा है! लेकिन हम उसे कैसे ढूँढेंगे?"
उन्होंने क्रिस्टल की गेंद में गहराई से देखा और एक कुम्हार को सबसे शानदार घोड़े की पीठ पर मिट्टी का बोरा रखते देखा।
"वह वहाँ फिर से है!" वे सब चिल्लाये। "हम राज्य के हर कुम्हार से मिलेंगे जब तक कि हम उसे ढूंढ नहीं लेते!"
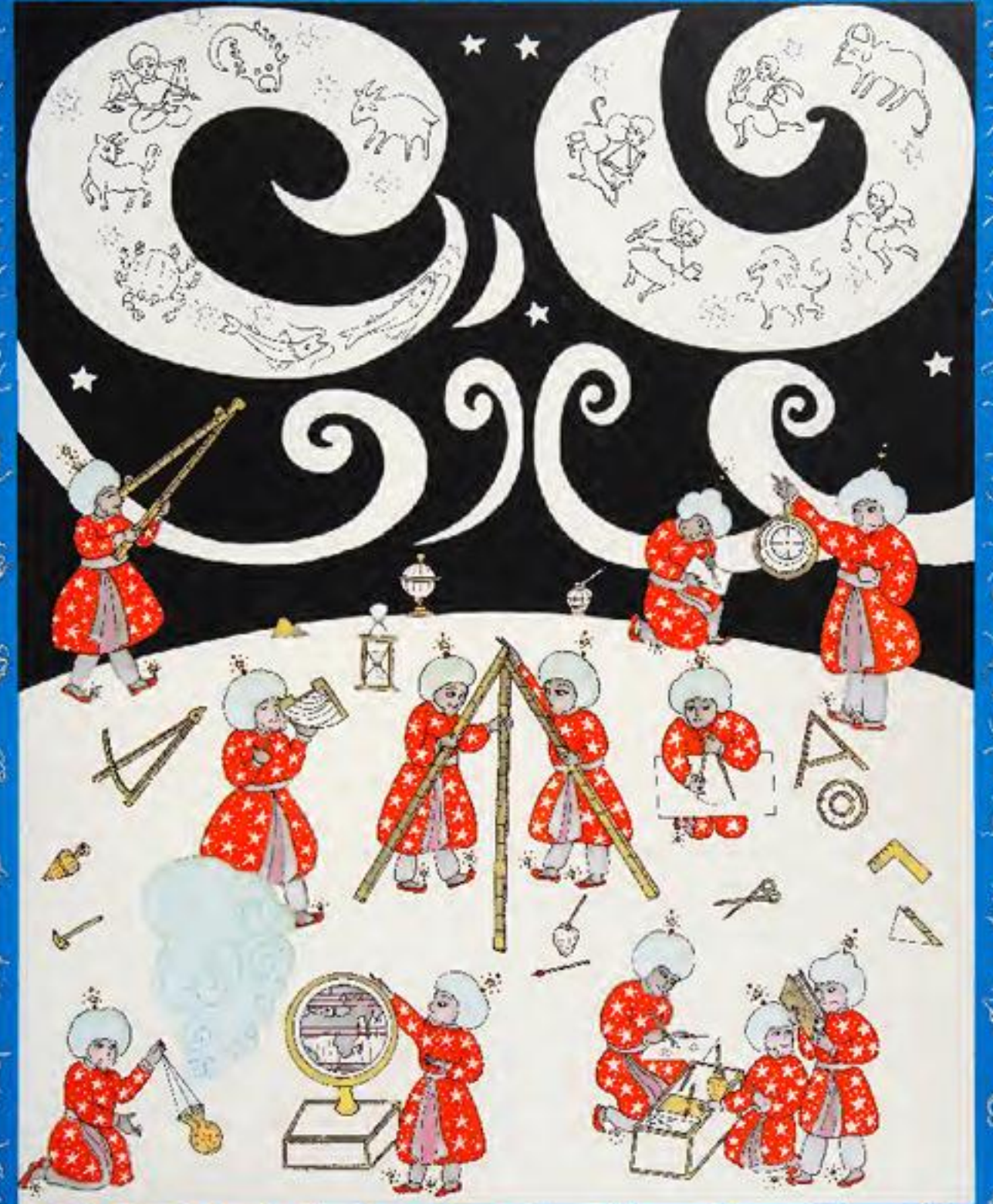
सही कुम्हार को ढूंढने में देर नहीं लगी, जो अपने दरवाजे पर उन बारह शाही ज्योतिषियों को देखकर सबसे ज्यादा चकित था। वह और भी ज्यादा चौंक गया जब उन्होंने कहा कि वे किसी भी कीमत पर उसके घोड़े को खरीदना चाहते हैं।

अब कुम्हार अपने घोड़े को बेचना नहीं चाहता था। और यहाँ तक कि अगर वो बेचना भी चाहे , तो उसे पता नहीं था कि क्या कीमत पूछनी चाहिए। इसलिए इस असमंजस की स्थिति में पुनः विचार करने के लिए वह अस्तबल में गया। वहाँ अचानक ही एक आवाज़ आती है। "अपनी पसंद की चीज़ मांगो!" कुम्हार के घोड़े ने अपनी भारी व गंभीर आवाज़ से कहा। आप कल्पना कर सकते हैं कि कुम्हार कितना चौंका हुआ था : एक बोलता घोड़ा! वह अब एक ही काम कर सकता था; अचम्भित होकर अपने घोड़े को ताकना।

उसका घोड़ा धीमी आवाज़ में आगे कहता है, "घबराओ नहीं, मैं ही वह पराक्रमी दिव्य घोड़ा हूँ, जिसके भाग्य में राजा की सेवा करना लिखा है। और दुखी मत हो, मेरे दोस्त, हर साल मैं तुम्हारे पास रहने के लिए वापस आऊंगा।" बेचारे कुम्हार ने महसूस किया कि स्थिति उसके नियंत्रण से परे है , इसलिए उसने अपने घोड़े के गले में अपनी बाहें डालकर उसे आत्मीयतापूर्ण और दुखी होकर अलविदा कहा।

कुम्हार और उसका घोड़ा बाहर खड़े शाही ज्योतिषियों के पास गए, जो बेसब्री से जवाब की प्रतीक्षा कर रहे थे, लेकिन अभी भी कुम्हार कुछ बोलने की स्थिति में नहीं था। दिव्य घोड़े ने एक कदम आगे बढ़ाया और कहा, "इस कुम्हार, जिसने मेरी बहुत प्यार से देखभाल की, के पास मिट्टी का एक पहाड़ और इस राज्य का सबसे अच्छा व मजबूत चाक होगा। अपने माल को बाज़ार तक ले जाने के लिए उसके पास एक शक्तिशाली बैल और एक शानदार गाड़ी होगी। और वह अकेला महसूस न करे इसलिए, उसके पास घोड़ों और भैंसों, भेड़ों और बकरियों, मुर्गियों और मुर्गों से भरा हुआ अस्तबल होगा!"
पलक झपकते ही इतने सारे जानवर प्रकट हो गए। इन सब की ओर कुम्हार का ध्यान इतना भटक गया था कि उसे अपने घोड़े का वहाँ से निकल जाना मालूम नहीं हुआ।
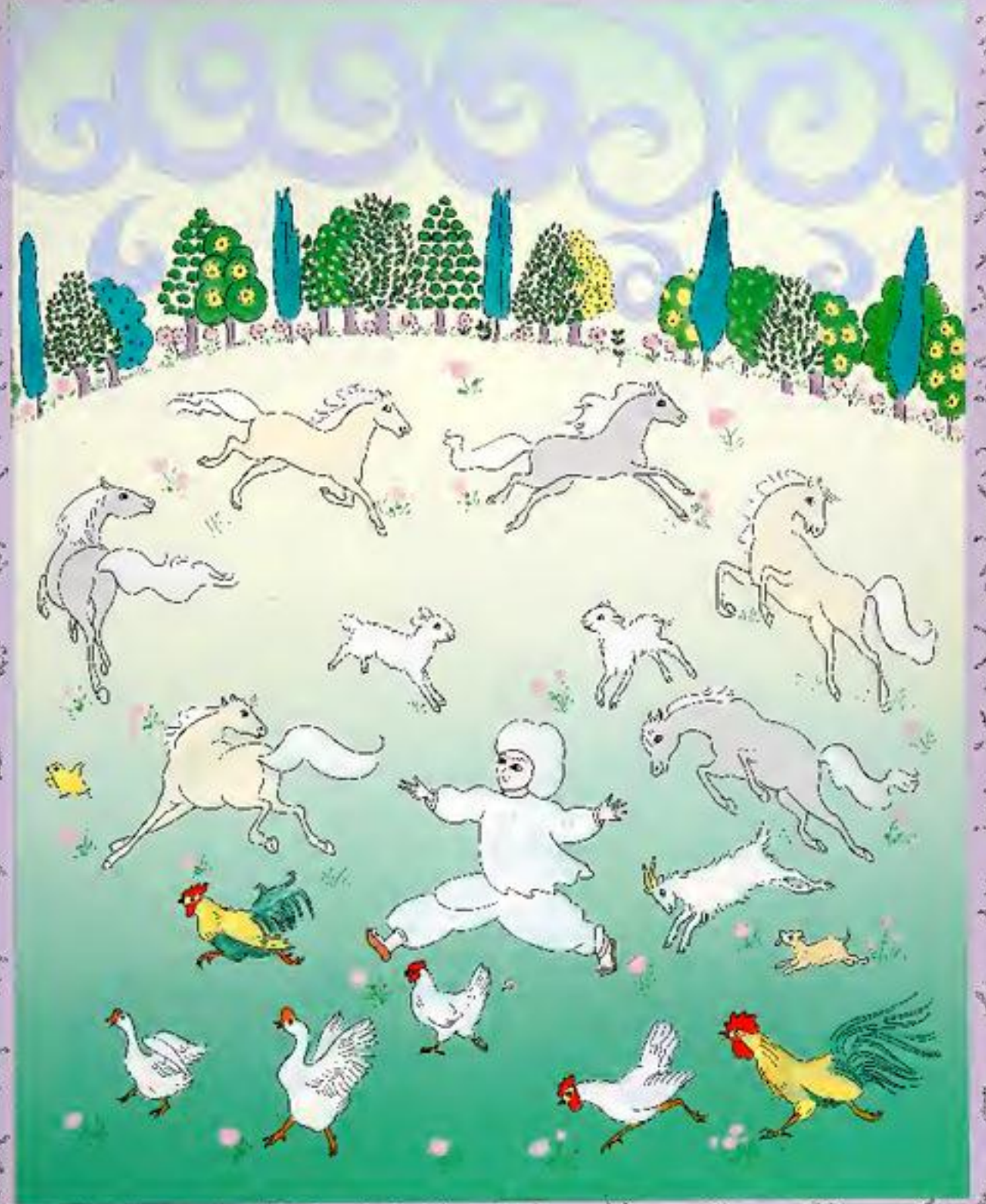
शाही दरबार में दिव्य घोड़े का शानदार स्वागत हुआ।
उसे एक लाल रंग की सोने की काठी (घोड़े की पीठ पर बैठने के लिए) और चांदी के जूते पहनने के लिए दिए गए, और उसकी गर्दन को फूलों की मालाओं से सजाया गया। तुरहियाँ बजायी गई , झंडे फहराए गए, और घोड़ों और हाथियों पर बैठे सिपाहियों की सेना उस दिव्य घोड़े को सलामी देने के लिए दो पंक्तियों में आगे आयी। जब राजा आगे बढ़ा और उस पवित्र घोड़े की काठी पर चढ़ा, तब सभी आनंद के साथ उत्साहित हुए।

लेकिन उसी क्षण, बहुमुखी सिर वाला साँप 'कालिया' अपने पाँच सौ घोड़ों पर बैठे पाँच सौ साँपों की सेना लेकर शहर के द्वार पर पहुँचा। राजा और उसका दिव्य घोड़ा, चलते तीर की भांति तेज़ी से उस विशाल दुश्मन का सामना करने के लिए सामने गए।
अचानक, अपने पिछले पैरों की गति धीमे करता हुआ, दिव्य घोड़ा रुका, और एक तुरही के आह्वान की शक्तिशाली ध्वनि के साथ, ज़ोर से हिनहिनाया।
अपने सच्चे नेता के आह्वान के जवाब में, कालिया के पाँच सौ घोड़ों ने हिनहिनाना शुरू कर दिया। उन्होंने अपनी पीठ पर बैठे फुफकारते साँपों को फेंक दिया और उन्हें कुचल कर मार डाला। कालिया अपनी पूरी सेना को खो चुका था और राज्य से बहुत दूर पहाड़ियों में जाने के लिए मजबूर हो चुका था, राजा की जीत हुई!
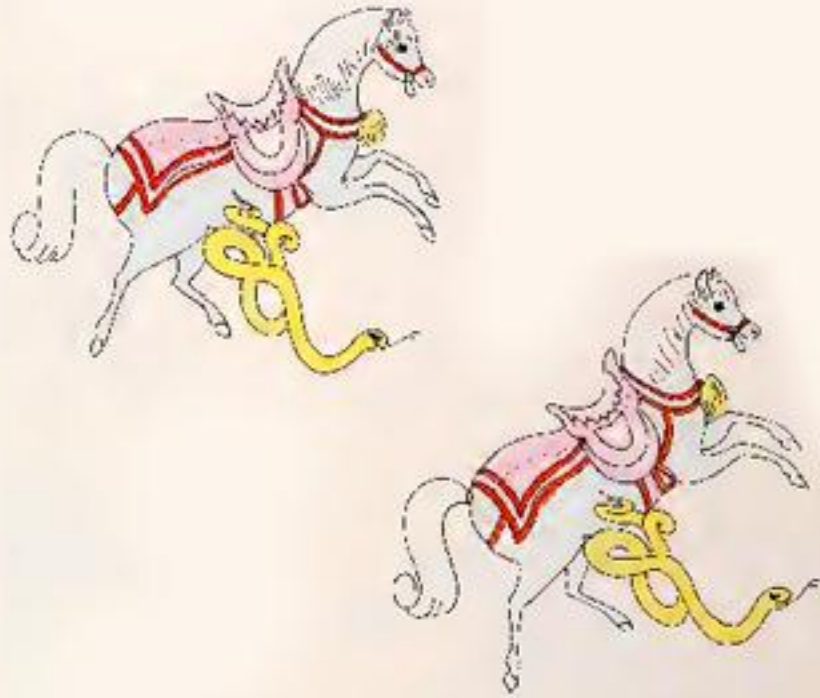
अंत में, इस महान जीत और शांति का जश्न मनाने के लिए, राजा ने इस दिन को पवित्र अवकाश घोषित किया। पूरा राज्य नारों से गूंजने लगा, "राजा की जय हो ! दिव्य घोड़े की जय हो!" मयूरों ने अपनी चोंच में रखे फूल लहराए, काले शेर और सफेद बाघ खुशी से उछले, जबकि सभी घोड़ों और हाथियों ने नृत्य किया!
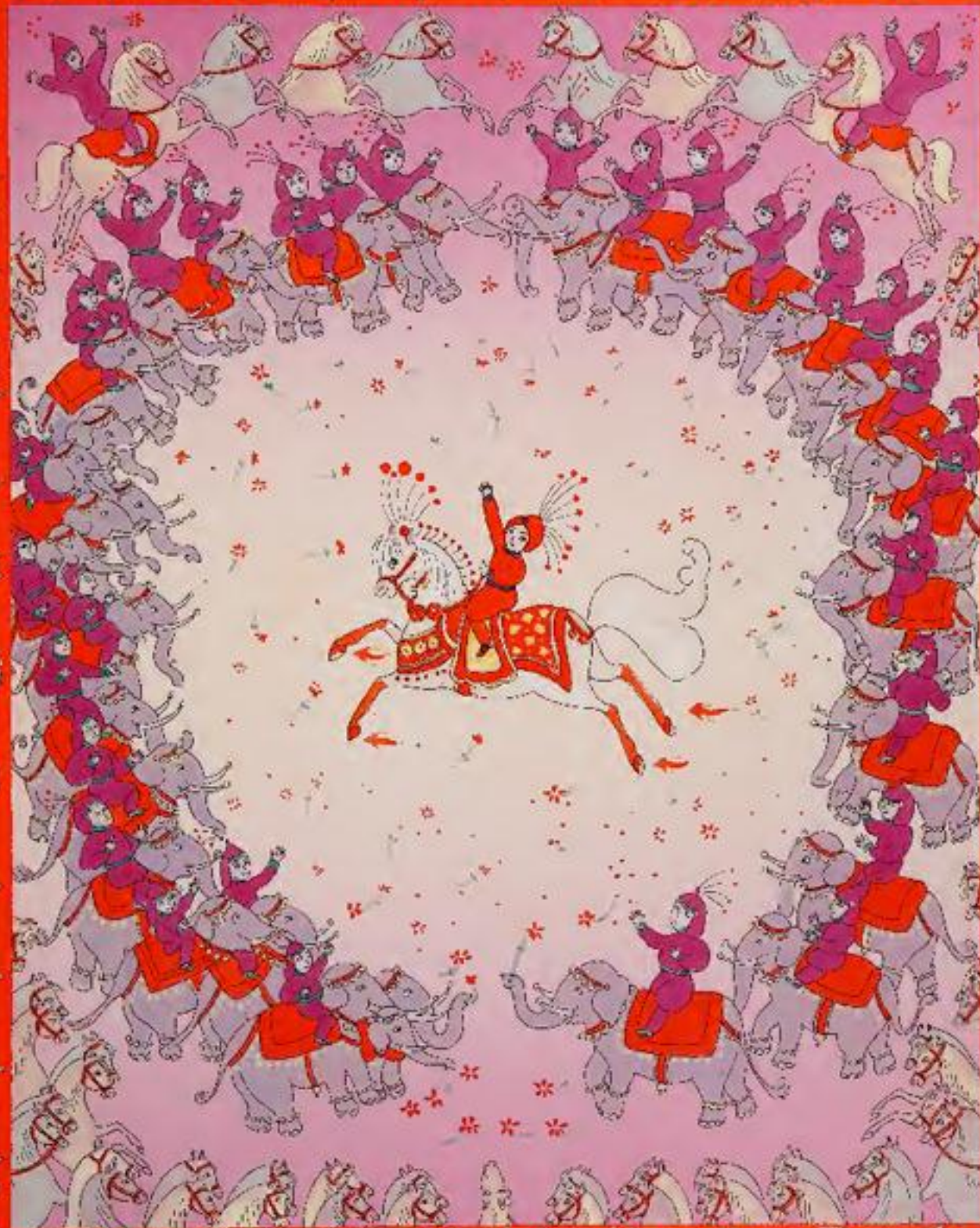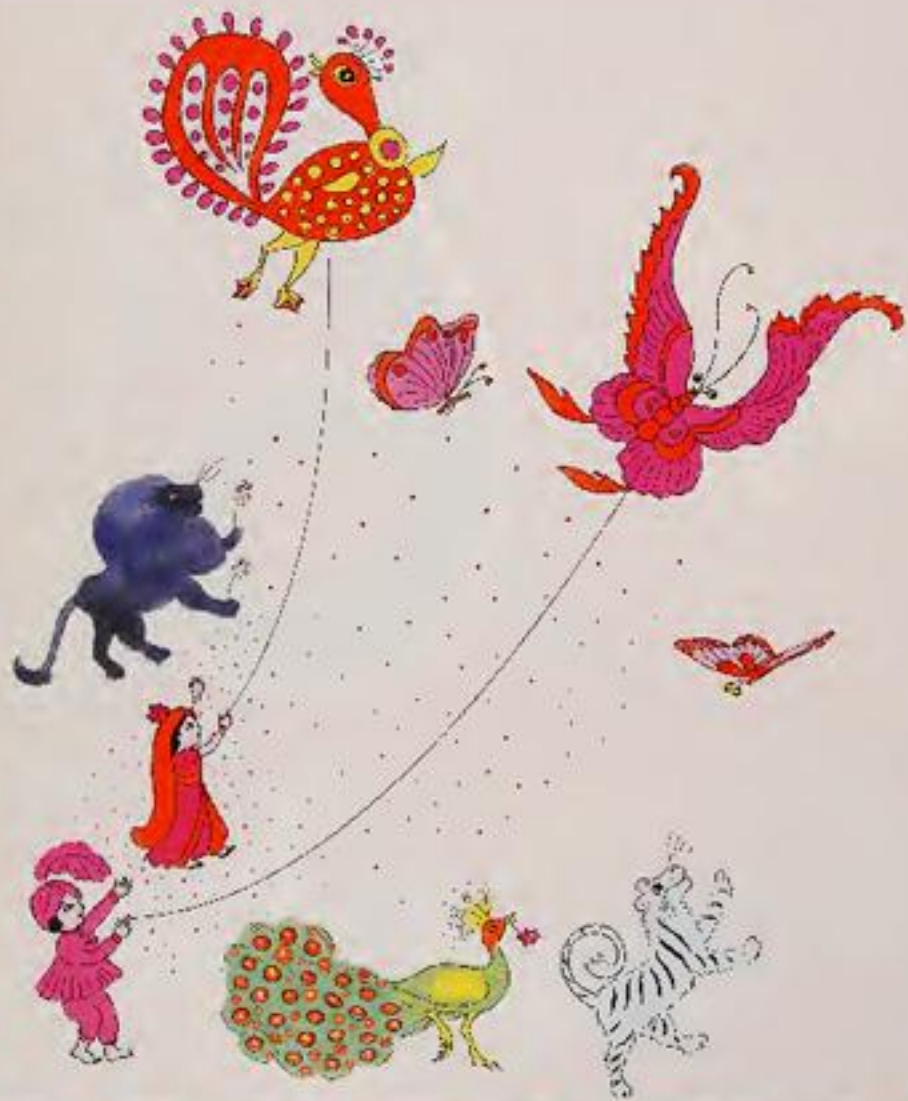
प्राचीन भारतीय दंतकथाओं में सर्वप्रथम राजाओं को दिव्य कहा गया। उन दिव्य राजाओं ने अपनी जादुई शक्तियाँ को अपने समकक्ष नश्वर राजाओं को वसीयत में दी। एक भारतीय राजा, इसलिए, न केवल अपने राज्य का सैन्य नेता होता था, बल्कि उसे दिव्य पुरुष का दर्जा भी दिया गया था।

' दिव्य घोड़े ' की कहानी एक भारतीय राजा के बारे में है जिसे फरिश्तों द्वारा एक दिव्य घोड़ा प्रदान किया गया, वह दिव्य घोड़ा जो सभी बुराइयों को जड़ से खत्म कर देता है और अच्छाई की ताकतों को पुनर्स्थापित करता है।

लेखक के बारे में

डेमी, जैसे कि उनकी छवि अपने कलाप्रेमियों और प्रशंसकों के बीच है , बच्चों के लिए लिखी पचास से अधिक पुस्तकों की लेखक और / या चित्रकार हैं। पूर्वी देशों और संस्कृतियों के साथ उनके निरंतर आकर्षण ने उनके काम की शैली और काम के प्रति मनोभावना पर गहरा प्रभाव डाला। उन्होंने भारत के बड़ौदा विश्वविद्यालय (फुलब्राइट छात्रवृत्ति के तहत) में पढ़ाई की , जिसकी प्रेरणा से 'द हेलोड हॉर्स' (एक दिव्य घोड़ा) का निर्माण हुआ।

डेमी न्यूयॉर्क शहर में रहती हैं।